পাশ্চাত্ত্য দর্শন

[Western Philosophy]

USOS-PER FOR

অধ্যাপক প্রমোদবন্ধু সেনগুপ্ত, এম.এ. (দর্শন ও বাংলা)
দর্শনশাস্ত্রের প্রাক্তন অধ্যাপক, কৃষ্ণচন্দ্র কলেজ;
হেতমপুর, বীরভূম।



42-96

প্রথম অধ্যার

হৰ্ননের সংজ্ঞা, আলোচ্য বিবর এবং জ্ঞানের অল্লাক্ত শাখার সজে क्षित्र ज्या

১। দুৰ্শনের ভ্রমণ ও সংজ্ঞা—পৃ: ৬ : ২। দুৰ্শনের পরিসর বাপরিধি — গৃঃ ৬: ৩। দর্শন ও অধিবিভা বা তথবিজা— গৃঃ > : ৪। অধিবিভা वा ज्वारिकां कि ज्वार !-- गृः ১० : १ । प्रमीत ७ व्यानिविका--- गृः ১৫ : । वर्षत अरुविका-गृः ১৮: १। षिविका ७ सानविका-गृः २১: ৮। বৰ্ণন ও বিজ্ঞান – পৃঃ ২২ ঃ ১। বৰ্ণন কি ব্যাপক ভৱ বিজ্ঞান বা বিভিন্ন বৈজ্ঞানিক জ্ঞানের স্বাষ্ট্রমাত্র বা বিজ্ঞানের মৌলিক ধারণাগুলির रिहारमुगर कान शांक १-- गृ: २१:) । नर्मन ७ ४४-- गृ: ७): >>। वर्गत्वत्र विकित्र मध्यां-भृः ७१।

দ্বিতীয় অধ্যায়

হাৰ্ত্তিক আলোচনার প্রতি

১ / বার্ণনিক আলোচনার বিভিন্ন প্রতি—পৃষ্ট ৩৭: (ক) বিচার-विद्वकवान-गृ: ७१: (व) जरमञ्चान-गृ: ७>: (গ) विठात्रवान-পুঃ s2 ঃ (व) বাশ্বিক প্রতি-পুঃ se : ২। দার্শনিক আলোচনার वर्षार्थ गक्छि-गः ३३।

তৃতীর অধ্যার

অবধারণ ও অনুমানের প্ররূপ

১। ভূমিকা—পৃঃ ৫২: ২ । চিভার খ্রমণ—পৃঃ ৫২: ৩ । চিভার সর্গত্য রূপ হল অবধারণ—পু: eo; ঃ। সাবান্ত ধারণা বা প্রভার कांत्व वरण !--गृः ee: e। जाबाङ श्रात्रण ७ व्यवधात्रण--गृः eo: । व्यवधानलक देवनिष्ठा-नृः ८१: १। व्यवधानलक व्यनीविकांग--र्शे ६२ : ৮। छत्रानिवहक चन्यान ७ जुन्मानिवहक चन्यान -- र्शः ६३ :)। जनगङ्गि ७ जनगि—१: 68: >०। जनगित्व जनगि—१: 66: >>। जन्मान जनदाह अबर जात्वाह—गृ: ७৮: >२। नहन, नाना अर छवा—गृः १०: ১०। वहन—विद्धावक अरः म्रश्नावक ; **गृर्वकः**निष धवर शबकः गिष्--गृः १९।

नुष्टी

চতুৰ্ অধ্যায়

আলেহণতি সম্পর্কীর মতবার

विवय

99-509

751

১। आंनरिका--१३ ११: २। आंतारशिक गण्यकीय वक्तिक--शृः १९ ई ७ । चिक्किछाताह—शृः १९ : ४। वृद्धिताह—शृः ≥० ३ e । बुष्टिरारिय नवालांहमा-गः >s: ७। विहायवीत-गः >>: ৭। বজাবাদ--পৃ: ১০৬ : ৮। জানোংশন্তি সম্পর্কীয় মন্তবাদক্ষপির মধ্যে **ब्लान् नक्यां एकि अक्षायां १ -- १३ > १ ।**

পথতম অধ্যাহ

বছবাদ এবং ভাববাদ

202-200

)। कृतिका--गृः ১०৮:२। तोविक वा गर्नेश वक्षवाव--गृः ১०»: । বিজ্ঞানসম্ভ বন্ধবাদ বা প্রভীকবাদ—শৃঃ ১১১ঃ ছ। ভাববাদ— गः ১১७ : e। ভाररात्मय ध्यमात्रात्म-गः ১১१ : ह्यातीत जार-वार--- १: ১১१ : ७। वार्करणत चाच्छ्रण छाववार--- १: ১১৯ : ৭। বার্কলের ভাববাদ কি আত্মগত ভাববাদ, না বস্তুগত ভাববাদ?— পুঃ ১২৪ ঃ ৮। বার্কদের বতবাদ কি আত্মকেন্ত্রিকভাবাদ ?—পৃঃ ১২৫ ঃ ১। কান্টের ভাববাদ--পৃ: ১২৬ : ১০। বন্ধগত ভাববাদ বা পরক্রবাদ--गः ১२» : ১১ । नदा दखवांच-गृः ১०১ : ১২ । मुदिहात वा दिहातम्बर वस्त्रात - शृह ३७३।

यहे व्यथाद

সভ্যতা সম্বীয় মন্তবাদ

7/02-703

244-208

১। স্ভ্যভার প্রকৃতি ও বানস্থা—গৃঃ ১৬১ : ২। স্ভ্যভা স্বন্ধীর বিভিন্ন ৰ্ভবাদ--পৃঃ ১৪০ : (ৰ) ব্জপ্ৰতীতিবাদ--পৃঃ ১৪০ : (ৰ) সংস্কিবাদ —गृ: ১৪२ : (त्र) चङ्क्रभावतिम—गृ: ১৪৭ : (व) द्याद्वीगवीम— गृ: ১৫• : कान् अख्वांत ग्रह्मावसनम गृ: ১৫**३ ।**

সপ্তম অখ্যার

লামাক্ত

১। সামান্ত বা ছাভি বলভে কি বোৰায় ?--পৃঃ ১৫৫: ২। সামান্ত বা জাতির শ্বরণ সভাকে বিভিন্ন সভবাদ—গৃঃ ১৫৬ : (1) মেটোর বস্থবাদ—

পুঃ ১৫৬ : (ii) সাৰাজ ধারণাবাদ--পুঃ ১৬০ : (iii) নামবাদ--পুঃ ১৬১ i

অষ্ট্ৰম অধ্যাহ

্ৰেশ, কাল, দ্ৰব্য ও কাৰ্যকারণ সম্বন্ধ

300-200

731

১। জাবের পদে মৌলিক ও অপরিহার্য ধারণা বা বিধেয়—পৃ: ১৯৫: २। तम ७ काम - गृः ३७७: ७। तम ७ काल्य चक्रण--गृः ३७१: 👔 প্রত্যক্ষাত দেশ ও ধারণাগত দেশ — গৃঃ ১৬৮ : ৫। প্রত্যাকগত কাল ও ধারণাগত কাল--পৃ: ১৬১ : ও। ছেল ও কালের ধারণার উৎপত্তি--—গৃ: ১৬> : ৭ । দেশ ও কালের কোন বস্তগত সন্তা আছে, না এগুলি बालिबानद शहरो बांक ?- गृः ১९८ : ৮। सम, कांग ७ चारमिक उप —গৃ: ১৭৭ : ১। দ্রব্য : দ্রব্যের স্বব্ধণ সম্পর্কে বিভিন্ন ধারণা—পৃ: ১৭১ : ১-। द्वर्राद शहनाद छेरनछि-नृ: ১৮१: ১১। कांद्रन वा कार्यकादन স্থৰ-শৃ: ১৮১: ১২। কারণ ও হেত্-শৃ: ১১•: ১০। কারণ বা कार्यकार्य সহক্ষের বরণ—পৃ: ১৯১ : ১৪। অভিজ্ঞ ভাবাদী ও বৃদ্ধিবাদীদের ब्रांड कांत्रन खरा कांत्रन ७ कार्यत्र मध्य शक्ताव्य चत्रन-भः ১১२: ১e। हिউমের মডে কার্যকারণ সহছের স্বরূপ--পৃ: ১৯৩: ১৬। কারণ স্পর্কে বৃদ্ধিবাদীদের অভিনত : প্রসক্তিতত্ত—পৃ: ১৯৬ : ১৭ । কার্যকারণ স্পর্কে কান্ট এবং হেগেলের অভিযত—পৃ: ২০১: ১৮। 'কার্যকারণ जन्म' जन्नर्द चांधूनिक नार्ननिकरनत्र बंख्यान-गृ: २०७: ১১। कार्यकादम मचरबद छे९१छि—शृः २०८: २०। खरा ७ कादम— পৃ: २०७: २১। বাত্রিক কার্যকারণ সম্পর্ক এবং পরিপত্তিমূলক কার্যকারণ ज्ञाह—गृ: २०१ ।

<u> শবম অধ্যায়</u>

বৃদ্ধ বিশ্ববাদ

२५०-२२ ७

১। বড়ের ধারণা—পৃ: ২১০ : ২। বড়ের প্রকৃতি সম্পর্কে প্রাচীন ৰতবাদ—পৃ: ২১১: ০। জড়ের প্রকৃতি সম্বন্ধে আধুনিক মতবাদ— পৃ: ২১৪: ৪। জড়ের প্রকৃতি সম্পর্কে বৈজ্ঞানিক বডবাদ—পৃ: ২১৬: प्राप्त निर्मणेकत्रग—गृ: २১৮: ७। बज्राम—गृ: २२०।

विवद

দশম অধ্যায়

আণ বা জীবন

148-48>

১। क्षिका--गृः २२८: २। श्रांव वा कीवत्वत्र छेश्यक्रि--गृः २२८: । वड अवर कीवरकरहर अरखक-नृः २२७: ४। अर्थातन अङ्गिष्ठ-शः २२> : १। श्रीम गम्भदं विकिन्न मख्यान—गृः २७० : ७। व्यन् সিবার গ্রহণবোগ্য—গৃঃ ২৪•।

একাদশ অথায়

অভিব্যক্তিবাদ

282-299

১। ভূমিক্টি-প: ২৪২: ২। অভিব্যক্তি কা'কে বলে ?—পৃ: ২৪২: ०। श्रिडेनांक्—भृ: २८६: ४। अखिताकितांक तः विवर्धनतात्कत्र भटक प्राप्त प्राप्त विवर्धनतात्कत्र भटक प्राप्त विवर्धनतात्क्र भटक प्राप्त विवर्धनत्व विवर्धनतात्क्र भटक प्राप्त विवर्धनतात्क भटक प्राप्त विवर्धनतात्क प्राप्त विवर्धनतात्व विवर्धनतात्व विवर्य विवर्य विवर्य विवर्य विवर्य विवर्य विवर्य वि বৈজ্ঞানিক প্রমাণ---পৃঃ ২৪৭ : ৫। অভিব্যক্তিবাদ বা বিবর্তনবাদের মূল বৈশিষ্ট্য-পৃ: ২৪৮: ৬। অভিব্যক্তিবাদের বিভিন্ন রূপ-পৃঃ ২৫০ : ৭। প্রজাতিভন্দ—পৃ: ২৫৪: ৮। বাহ্রিক অভিব্যক্তিবাদের সমালোচনা— गृ: २७२ : »। गृतिगिष्ठम्गक चित्राक्तियोग-गृह २७७ : > । एकनम्गक चित्राक्तिबार--गृः २१० : ১১। উদ্মেৰমূশক चित्राक्तिबार--गृः २१८।

বাদশ অহ্যার

)। यन वनएक कि वृद्ध ?—गृः २१४: २। यन खुदः (ठछना—गृः २१४: ৩। প্রাণ এবং চেডনা—পৃঃ ২৮০: ৪। মনের স্বরণ সম্পর্কে প্রাচীন मखनान-गृ: २৮): १। यन ता वाच्या मुन्नार्क विकिन्न मखनान-शृः २४२ : ७। जाजा मराव जिल्लाकावानीरमत मकवान-शः २५७ : १ । जाना महत्व काल्केत्र मखराम--शृः २>० : ৮। जाना मन्नर्स् शूक्षवान-गृ: २>७: >। मन वा चाचा जन्मदर्क चाठत्रवान-गृ: २>३: ১০। মন বা আত্মা সম্পর্কে জড়বাদীদের অভিনত-পৃহ ২১৬ ৷

1944

ত্ৰহ্যোদশ অধ্যায়

বেছ ও মনের সম্পর্ক

イタトール・グ

১। क्षिका—गृः २৯৮: २। त्रष्ट ७ मत्तव गर्चाव मखीव मखवान— गृः २৯৯।

শেতুদ্শ অধ্যায়

বছৰবাদ, বৈতবাদ ও অব্যৈতবাদ

050-050

) । जूनिका--गृः ०১० : २ । वहचवान--गृः ०১० : ७ । देखवान--गृः ১১७ : ४ । जद्मखवान--गृः ०२० ३ ९ । अद्मयत्रवान--गृः ७२० ।

পঞ্চদশ অখ্যায়

जेपन

948-048

)। ज्याना-गृः ७२३ : २। वर्गात व्यवस्य धातमा-गृः ७२० :

०। व्यवस्य श्राहण-गृः ७२१ : ८। व्यवस्य गण् कोव ४ क्याप्तव गण्ड-गृः ७०० : ८। वार्षितात व्यवस्यान-गृः ७०० : ७। कान् व्यवस्य ग्रह्मावन्य ?-गृः ०३ > : १। व्यवस्य गण्ड कोवाचात गण्ड-गृः ०३ > : ४। व्यवस्य चावसं विकास्य चानि ?-गृः ७३ २ : ১। व्यवस्य चिक् श्राहण-गृः ०३ ८।

ৰোড়শ অধ্যায়

न्गा

1040-1049

>। त्र्ण का'त्क वरण?—गृः ७५६: २। ७४१ ७ त्र्ण —गृः ७७७: ७। ७४। ४४ व त्र्ण विषय चर्षात्रम् चर्षात्रम् चर्षात्रम् चर्षात्रम् चर्षात्रम् चर्षात्रम् चर्षात्रम् विचित्र प्रामित्क वर्षायः—गृः ७१०: ७। त्र्ण कि वस नितरम् नां वस्त्रम् ?—गृः ७१०: १। ७५ व त्राम्मात्र त्राम्मात्रम् चर्णाः १। ७५ व त्रामात्रम् वर्षात्र त्राम्मात्रम् चर्णाः ०৮८।

পরিশিষ্ট

অধ্যারভিত্তিক **গ্রেমাল।** বিভিন্ন বিশ্ববিভালনের গ্রেমাবলী **471-8.**2 **621-67**6

802-834

SYLLABUS

NORTH-BENGAL UNIVERSITY

Two-year Degree (Pass Course)

Nature of Philosophy. Philosophy and Science. Empiricism. Rationalism and Criticism as theories of knowledge. Idealism and Realism as theories of Reality. Space, Time, Substance and Causality as Categories. The Problem of Universals: Nominalism and Realism. Theories of Truth: Correspondence, Coherence and Pragmatism. Idea of God—The Biological Argument.

BURDWAN UNIVERSITY

Two-year Degree (Pass Course)

Philosophy and Science. Branches of Philosophy: Epistemology, Metaphysics. Truth-Correspondence. Coherence, Pragmatism, Empiricism and Rationalism. Elimination of Metaphysics, Idealism Versus Realism. Theories of Causation: Regular Sequence, Necessary Relation. Mind and Body.

VIDYASAGAR UNIVERSITY

Two-year Degree (Pass-Course)

- 1. Nature and Scope of Philosophy.
- 2. Criticism as a theory of the origin of knowledge.
- 3. Realism and Idealism—its different types.

 (Naive Realism, Scientific Realism. Neo and Critical realism. Subjective and Objective Idealism.)
- 4. Evolution—its meaning and different theories on it.